इक्कीसवीं सदी के साहित्य में

हाशिये का समाज

Scanned by CamScanner

ISBN	978-93-88640-54-1
संपादक	डॉ. सुधा त्रीवेदी
मूल्य	399/-
प्रकाशन वर्ष	2019
सर्वाधिकार @	सुरक्षित
मुद्रक	आकृति प्रिंटर्स, नई दिल्ली
प्रकाशक	नवजागरण प्रकाशन
	: A-3, विकासकुंज एकसटेंसन, विकास नगर, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
	: 109, प्रथम तल, मनीष मार्केट, सेक्टर-11, द्वारका, नई दिल्ली-110 075
	संपर्क : +91-9718013757
	ईमेल : navjagranprakashan@gmail.com
	वेबसाईट : www.navjagran.in

Ikkisavin Sadi Ke Sahitya Me Hashiye Ka Samaj
Edited by **Dr. Sudha Trivedi**
Published by: Navjagran Prakashan

अनुसूची

प्राक्कथन 08

01. नई शताब्दी के हिंदी साहित्य में हाशिये का समाज
रमेश गुप्त नीरद 18

02. नई सदी के हिंदी साहित्य में हाशिये का समाज
डा. स्वाति पालीवाल 23

03. हिन्दी सिनेमा और समाज
डॉ- सविता धुड़केवार 27

04. हाशिये के साहित्य चिंतन की चेतना
प्रो. संजय एल. मादार 33

05. 'शिकंजे का दर्द में' में दलित जीवन का धार्मिक रूप
डॉ. बी संतोषी कुमारी 38

06. मुर्दहिया उपन्यास में हाशिये का समाज
डॉ.शक्ति द्विवेदी 47

07. लवलीन की कविताओं में समाज का स्त्री को हाशिये पर धकेलने का चित्रण
स्वाती० जी० 54

08. नई शताब्दी के हिन्दी उपन्यासों में हाशिये का आदिवासी समाज (आदिवासी केंद्रित उपन्यासों के संदर्भ में)
बुद्धिनी कुमारी 60

09. प्रेम कापड़िया की कहानी 'जीवन साथी' एवं रमेश चन्द्र जलैनिया की कहानी 'जीने का आधिकार' में अभिव्यक्त दलित समाज
डॉ. हेमा कृष्णन 64

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

23. 'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास' अल्मा कबूतरी में नारी चित्रण
डॉ. आशा चतुर्वेदी 140
24. वीरेंद्र जैन के उपन्यास में चित्रित हाशिये का समाज
एस.राजलक्ष्मी 146
25. उर्मिला शिरीष की कहानी 'पीली धातु' में आदिवासी विमर्श
डॉ. अनिता पाटिल 152
26. नई शताब्दी के हिंदी साहित्य में हाशिये पर दलित समाज
गुड़िया चौधरी 159
27. "सूरज प्रकाश कृत उपन्यास 'नॉट इक्वल टू लव' में नारी विमर्श"
इंदु मलिक नारा 163
28. नई शताब्दी के हिंदी उपन्यासों मे हाशिये पर समाज-
किन्नरों के परिप्रेक्ष्य में
महेन्द्र वर्मा 168
29. धूमिल की कविताओं में हाशिये का समाज
डॉ. डॉली 174
30. भारतीय समाज के निर्माण में हिंदी सिनेमा की भूमिका
(हाशिये पर दलित एवं शोषित वर्ग)
[redacted] 179

Scanned by CamScanner

वीरेंद्र जैन के उपन्यास में चित्रित हाशिये का समाज

एस.राजलक्ष्मी
सहायक प्राध्यापिका
लोयोला महाविद्यालय

देश के विभिन्न प्रजातियों के बीच के अंतः संबंध के उत्तरोत्तर विकास, किसी समुदाय उस समुदाय के सदस्य द्वारा अन्य समुदाय में व्यवस्थित होने की प्रक्रिया, सांस्कृतिक परिवेश में विकसित हो रहे व्यक्ति के सामाजिकरण की प्रक्रिया अथवा किसी समूह या व्यक्ति द्वारा स्थान परिवर्तन (migration) के बाद उत्पन्न और विपरीत परिस्थितियों के कारण आसन्न के अनुभव के दौर से गुजर रहे व्यक्तियों का समूह के चरित्र तथा समुदायों के अध्ययन को लेकर समाजशास्त्र में इस अवधारणा का विकास हुआ । समाज के उन वर्गों-समुदायों के सम्मिलित समाज को हाशिये का समाज कहा जाता है जो वर्चस्ववादी कुनबे की तुलना में सामाजिक, राजनीतिक ,सांस्कृतिक और शैक्षिक और आर्थिक स्तर पर किन्हीं कारणों से पीछे रह गए हैं ।वर्तमान भारतीय परिवेश में स्त्री, दलित, आदिवासी, किसान, मजदूर आदि सभी हाशिये पर है ।आदिवासी चिंतक हरिराम मीणा ने हाशिये के समाज को परिभाषित करते हुए लिखा है कि, "किसी भी राष्ट्रीय समाज के उन घटकों के मानव समुदाय के सम्मिलित समाज को हाशिये का समाज कहा जाता है, जो समाज के युवा तबके की तुलना में सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक स्तर पर किन्ही कारणों से पीछे रह गया है।"[1] साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य में इन आधारशील वर्गों का यातना भरी जीवन का चित्रण कई साहित्यकारों ने अपनी कृतियों में किया है, समाज के कुछ अलगाववादियों

ने शिक्षा, सत्ता, संस्कृति और आर्थिक संसाधनों से वंचित कर इन लोगों को हाशिये पर ढकेल दिया है। इन आधारशिल वर्गों के साथ ही समाज विकसित और व्यवस्थित हो सकता है। दिनकर के शब्दों में

"जब तक मनुज- मनुज का यह सुख-भाग नहीं सम होगा,
शमित ना होगा कोलाहल, संघर्ष नहीं कम होगा।"

स्त्री जितनी भी उन्नति करें कर समाज में, परिवार में उसका स्थान गौण ही है। उसकी खुशियां, इच्छा, सोच सब मायने नहीं रखती। अपने परिवार के लिए अपनी सारी इच्छाएं त्याग करें फिर भी उसे उतनी मान्यता नहीं दी जाती है । वीरेंद्र जैन ने अपने 'प्रतिदान' उपन्यास में परिवार के लिए स्त्री की उत्कृष्ट त्याग का चित्रण किया है। पति की उदारता से संतुष्ट प्रभा अपने देवरों की परवरिश बखूबी निभाती है, "चार-पांच वर्ष के लिए प्रभा ने स्वयं को समेट लिया अपनी तमाम इच्छाएं कामनाएं मन में संजोकर रख ली आगामी अतीत के लिए"[1]। जिनके लिए प्रभा ने इतना बड़ा समर्पण किया वहीं देवर मनीष ने गर्भवती प्रभार के पेट में लात मारी जिससे गर्भ में ही बच्चा मर गया और प्रभा बच्चे के लिए तड़पने लगी डॉक्टर ने साफ बताया कि प्रभा कभी मां नहीं बन सकती। जिसने ममता दी उसके ही बच्चा छिन लिया गया। दूसरी ओर लेखक ने अपने उपन्यास 'सुरेखा पर्व' में विद्या के साथ उसके पति का व्यवहार कैसे उसकी खुशियों से वंचित कर देता है। इसका विवरण किए हैं और वह स्वतंत्र रूप से जीने की सोच लेती है अगर पति उसका साथ ना दे तो उसका जीवन आधार ही टूट जाता है तो इसलिए यह निर्णय उसने लिया।विद्या ने बड़ी अनुयाई से कहा ,"मैं अब उनके साथ नहीं रह सकती आप इन्हें कहिए कि यह मुझे तलाक दे दें।"[2] पत्नी को यातना देकर उससे आनंद उठाना पुरुषों की समाज में कमी नहीं है। स्त्री हमेशा यातनाओं को सहती है। पर आधुनिक युग में स्त्री पति के इस कर्कश व्यवहार का विरोध करते हुए अपनी जिंदगी अपने बच्चों के साथ संतुष्टि से जीना चाहती है। इसका उल्लेख लेखक ने सुरेखा पर्व उपन्यास मैं उल्लेखित किया है, नायिका विद्या अपने पति के दुष्ट व्यवहार से तंग आकर कहती है, "तो क्या इसी तरह तिल तिल कर मारते हैं? लेकिन मैं इस तरह नहीं मरूंगी तुम देखना किसी दिन मैं बच्चों को लेकर यहां से भाग जाऊंगी"।[3] कितनी भी दयनीय दशा हो उसे इतने दुख के बाद औरत पति को छोड़ सकती है,

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner